Shodh-Rityu तिमाही शोध–पत्रिका

PEER Reviewed & Refereed JOURNAL

ISSUE- webinar special IMPACT FACTOR - **SJIF-6.586,** IIFS-4.125, ISSN-2454-6283

AN INTERNATIONAL MULTI-DISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL

अंतरराष्ट्रीय बहु भाषीय एवं बहु शाखीय शोध-पत्रिका

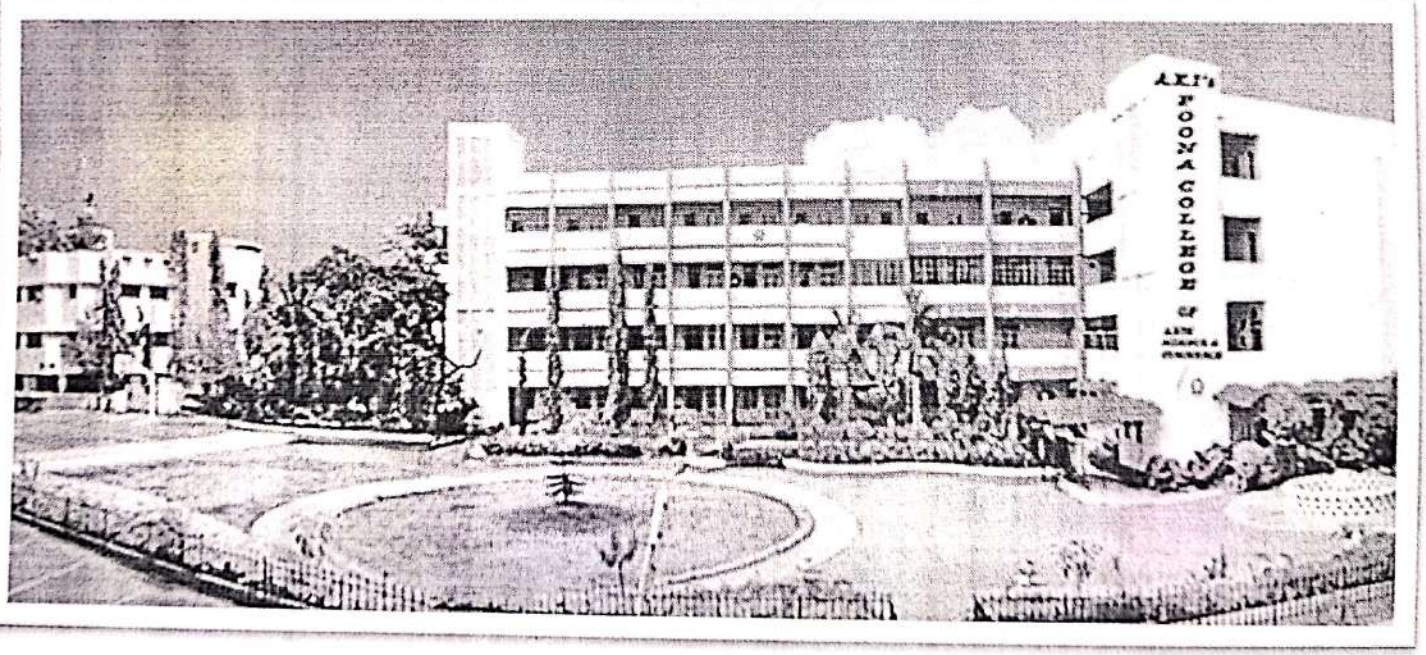

पूना कॉलेज, पूना, अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी, इक्कीसवी सदी में हिंदी साहित्य और मिडिया का बदलता स्वरूप 06 मार्च, 2020
वेबीनार विशेषांक प्रकाशन दिनांक–रविवार, 15 अगस्त 2021

AUGUST 15, 2021

Scanned with OKEN Scanner

प्रकाशन/प्रकाशक
डॉ.सुनील जाधव
नव साहित्यकार
पब्लिकेशन, नांदेड–महाराष्ट्र

मुद्रण/ मुद्रक
तन्मय प्रिंटर्स,नांदेड
डॉ.सुनील जाधव,नांदेड

मेल पता shodhrityu78@yahoo.com
वेबसाइट www.shodhritu.com
"शोध–ऋतु ' तिमाही पत्रिका में आलेख लेखक निम्न बिन्दुओं पर अवश्य ध्यान दें ।
फॉण्ट–कृति देव 10 वर्ड फाइल में ही सामग्री स्वीकृत की जायेगी ।
आलेख पेज की मर्यादा चार पेज होगी ।
आलेख विशेषज्ञों द्वारा चयन किये जायेंगे ।
चयनित आलेख की सूचना मेल द्वारा आलेख लेखक को दी जायेगी ।
चयनित आलेख के लिए 1000रु प्रोसेसिंग शुल्क लिया जायेगा ।
लेखक मौलिक शोधपरक एवं वैचारिक आलेख ही भेंजे ।
व्हाट्स एप–9405384672

बैंक विवरण

NAME	SUNIL GULABSING JADHAV
BAINK	BANK OF MAHARASHTRA, WORKSHOP CORNER, NANDED, MAHARASHTRA
ACCOUNT NO.	2015 8925 290
IFSC CODE	MAHB0000720

Scanned with OKEN Scanner

25.इक्कीसवीं सदी में मीडिया का बदलता स्वरूप–*डॉ. झगडे व्ही. एस.*.....64
26. विज्ञापन फिल्म एक प्रभावी माध्यम–*डॉ. जिजाबराव विश्वासराव पाटील*.....67
27.साहित्य एवं मीडिया का समाज पर प्रभाव –*प्रा.कविता चव्हाण*.....68
28 सदी में मीडिया का बदलता स्वरूप–*डॉ .केशव क्षिरसागर*.....70
29.भारतीय समाज पर समाज माध्यमो का प्रभाव–*सहा. प्रा. योगेश्वर रामजी कुऱ्हाडे*.....72
30.इक्कीसवीं सदी में उत्तर आधुनिकतावादी चिंतन–*प्रा.बहिरम देवेंद्र मगनभाई*.....75
31.साहित्य एवं मीडिया का समाज पर प्रभाव–*प्रा.डॉ.कुसुम राणा*.....77
32.इक्कीसवीं सदी के साहित्य में चल रहे विविध विमर्श– *प्रा.ललिता भाउसाहेब घोडके*,.....79
33.मीडिया का बदलता स्वरूप–*डॉ.माधुरी जोशी*.....82
35.दलित भाषा विमर्श–प्रा.डॉ.सौ.मंगला श्री. कठारे.....86
36.'यह अंत नहीं' कहानी में दलित चेतना–डा.मनीषा ठक्कर.....88
37.इक्कीसवी सदी में मीडिया का बदलता स्वरूप–*नागीले मनिषा जनार्धन*.....90
38. मीडिया और हिंदी भाषा का बदलता स्वरूप–*मेदिनी एस अंजनीकर*.....93
39. 21वीं सदी के साहित्य में चित्रित स्त्री विमर्श –नासिरा शर्मा की कहानियों के संदर्भ में–*प्रा. डॉ. मीनाक्षी विनायक कुरणे*.....96
40.सोशल मीडिया और बदलता हुआ भारतीय परिवेश–डॉहाशमबेग मिर्झा.....98
41.सोशल मीडिया पर प्रकाशित हिंदी कविता का स्वरूप–फेसबुक के संदर्भ में–*ईसा मिर्झा, डॉ. हाशमबेग मिर्झा*.....101
42.सोशल मीडिया का साहित्य के प्रचार प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका–*प्रा. डॉ. ऐनूर शब्बीर शेख*.....104
43. किन्नर कथा मैं पायल और पोस्ट बॉक्स नं०203 नालासोपारा'में चित्रित किन्नर विमर्श–*मुजावर जैनु हमिद*.....107
44. वर्तमान मीडिया : परिवर्तित साहित्य एवं जनजीवन–*डॉ. नितीन रंगनाथ गायकवाड*.....110
45.महिलाओं की आत्मकथा और नारी विमर्श–*अनिता रमेश जठार*.....112
46. इक्कीसवी सदी में साहित्य का बदलता स्वरूप–*प्रा. पल्लवी भुपेंद्र पाटील*.....113
47.स्त्री–विमर्श के परिप्रेक्ष्य में नासिरा शर्मा की 'अपनी कोख' कहानी –*प्रा. दशरथ काशीनाथ खेमनर*.....115
48.हिंदी बाल साहित्य में राष्ट्रीय चेतना–डॉ.पंडित बन्नए.....117
49.इक्कीसवीं सदी में मीडिया का बदलता स्वरूप–डॉ.प्रतिभा आनंदराव जावळे.....121
50.21वीं सदी के हिंदी उपन्यासों में स्त्री का बदलता स्वरूप–डॉ.प्रवीण मन्मथ केंद्रे.....123
51.ओम प्रकाश वाल्मीकि के साहित्य मे दलित विमर्श–प्रा.डॉ. अनिता वेताळ /अंत्रे.....126

Scanned with OKEN Scanner

44. वर्तमान मीडिया : परिवर्तित साहित्य एवं जनजीवन

–डॉ. नितीन रंगनाथ गायकवाड
सा.प्राध्यापक, हिंदी विभाग,
जे.के.जाधव महाविद्यालय वैजापूर जि.औरंगाबाद

इक्कीसवीं सदी के नवइलेक्ट्रॉनिक्स माध्यमों के अंन्तर्गत नित्य नये – नये अविष्कार होने लगे है। सोशल मीडिया के अंतर्गत व्हाट्सअप, फेसबुक, ट्विटर, योटयुब जैसे सोशल मीडिया के माध्यम से लोग तरह –तरह की जानकारी प्राप्त कर रहे इन सोशल मीडिया माध्यमों के कारण हिंदी का प्रचार एवं प्रसार अनेक पाठकों तक हो रहा है । मीडिया के कारण हिंदी का साहित्य संत कबीर से लेकर वर्तमान रचनाकारों तक एक साथ पढने को उपलब्ध हो रहा है । कई सारे पाठक तो मोबाईल इस उपकरण के माध्यम से देश विदेश के समग्र साहित्य को पढ पा रहे है और इसे मनचाहे तरिके से किसी भी समय देख पा रहे है । विभिन्न क्षेत्र के लोग हिंदी का इस्तमाल कर सकते है और कई तरह का लाभ उठा सकते है । इसके साथ सोशल मीडिया के अंतर्गत योटयुब को भी महत्वपुर्ण स्थान प्राप्त हो चुका है क्योंकि इसके माध्यम से विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों का साथ ही साथ महाविद्यालयीन लेक्चर्स, किताबों की जानकारी हिन्दी नाटक, एकांकी व्हीडिओ के द्वारा लोग देखते है और ढेर सारा ज्ञान प्राप्त करते है । योटयुब एक साझा वेबसाईट है जहॉ उपयोगकर्ता वेबसाईट पर व्हीडीओ क्लिप साझा कर सकता है । योटयुब के माध्यम से हम इंटरनेट पर हिंदी भाषा के साहित्यिक, शैक्षिक, सामाजिक, राजनीतिक , आर्थिक, सांस्कृतिक क्षेत्र से संबंधित अनेकानेक व्हीडीओस किसी भी समय देख सकते है और सुन सकते है । साथ ही साथ विभिन्न हिंदी और अन्य भाषा के न्युज चैनलों के माध्यम से प्रसारित किए जानेवाले कार्यक्रम, साक्षात्कार किसी भी समय देख पाते है ।

इसी के साथ –साथ फेसबुक यह एक ऐसा माध्यम है जो वर्तमान समय मे लोंगो के दिलों पर राज कर रहा है क्योंकि इसके माध्यम से कई सारे लोग विभिन्न प्रकार का ज्ञान हासिल कर रहे है । फेसबुक पर विभिन्न पत्र –पत्रिकांओ के बारे में, नई–नई साहित्यिक और अन्य मणुष्य जीवन से जुडी ज्ञानवर्धित किताबों की जानकार हासिल होती है । साथ ही साथ यदि हमे कोई किताब पसंद आती है तो हम तुरंत उसे फेसबुक एवं इंटरनेट के फ्लिफकार्ट जैसे साईट के माध्यम से बैठे – बैठे खरीद सकते है ।

मीडिया के कारण हिंदी साहित्य भी आज के दौरे मे अपनी सिमा लांघकर अपना प्रसार करती हुई दिख रही है वह विभिन्न विधाओं मे विश्व की अन्य भाषाओं से कदमताल कर रही है । धर्मेंद्र प्रतापसिंह के अनुसार

"आनेवाला समय हिंदी का है । बस कुछ दकियानूसी और अदुरदर्शी सोचवाले ही हिंदी के प्रति नकारात्मक भाव व्यक्त कर रहें है। आज के समय में न तो हिंदी की सामग्री की कमी है और न ही पाठको की । हॉ विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में अभी और अधिक कार्य करने की आवश्यकता है । जिजसे इसका पूर्ण लाभ आम आदमी को मिल सके । हिंदी का मजबूत पक्ष यह भी है कि यह बाजार की भाषा बन चुकी है जो अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर इसकी उपयोगिता सिध्द करने के लिए पर्याप्त है।"[1] इस से कहा जाएगा कि इन विकसित माध्यमों के कारण हम हमारा साहित्य देश–विदेशों में पहुॅचाकर उसे और विस्तृत मात्रा में नई पहचान दे सकते है ।

पिछले 15–20 वर्षो के कालखंड में इंटरनेट के कारण विभिन्न वेबसाईटस, ब्लॉग्ज, सोशल मीडिया आदि के माध्यम से अधिकांश जनसमुदाय तक हिंदी भाषा को पहूॅचाने का कार्य हो रहा है । इंटरनेट पर हिंदी कि पहचान बनाने के लिए सब से पहले हिंदी भाषा के वेबदुनिया डॉट कॉम इस वेबसाईट के रुप में 1999 में सामने आया । इसके उपरान्त इंटरनेटपर दिन ब दिन कई सारे वेबसाईटस आने लगे । 'रचनाकार' विश्व की पहली युनिकोडित हिंदी की सर्वाधिक प्रसारित लोकप्रिय ई–पत्रिका है। साथ ही साथ महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रिय हिंदी विश्व विद्यालय वर्धा के अभिक्रम के अंतर्गत बनाई गई 'हिंदी समय' वेबसाईट पर तकरीबन 1000 से अधिक रचनाकारों को हम पढ सकते है । इन वेब साईटस के अलावा अधिकांश अखबार भी इंटरनेटपर आ चुके है । जिनमें दैनिक जागरण, नवभारत टाइम्स, हिंन्दुस्तान, अमर उजाला, दैनिक भास्कर, जनसत्ता, देशबंधु आदि शामिल है ।

परिवर्तीत मानवी जीवन :

Scanned with OKEN Scanner

मनुष्य अपने विचारों को अभिव्यक्त करणे के लिए अपने विचार विभिन्न माध्यमों से रखने का प्रयास करता है, उसमें बोलना, लिखना या विभिन्न हावभावों के माध्यम से विचार प्रकट करता है । समायानुसार इन माध्यमों मे बदलाव आया अभिव्यक्ति के साधन बदल गये उसी के साथ मानवी विचारों मे भी परिवर्तन आया । नई सोच और नये माध्यम इस कारण समाज में एक परिवर्तन की लहर दौडने लगी । वर्तमान समय में हर चिज परिवर्तीत होने लगी है । गॉव शहरों में परिवर्तीत होने लगे, साईकल से मोटार कार आ गई, झोपडी के पक्के मकान बन गए, नई –नई सडके बन रही है, जंगलो की जगह सीमेंट के जंगल बढने लगे है, । आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि हर क्षेत्र में हमें परिवर्तन का दौर दिख रहा है । मनुष्य की सोच में बदलाव आया और सारी सृष्टि बदलने लगी तो फिर साहित्य भी समाज का दर्पन है । जिस तरह से इन सारी चिजों में बदलाव आया उसी तरह साहित्यिक बदलाव भी आया है और साहित्य को अभिव्यक्त करणेवाले जो माध्यम है उसमें भी परिवर्तन आया है और इसी बदलते समय के माध्यम को मीडिया कहा जाता है । यही मीडिया हमें इस बदलते संसार का चित्र भी दिखाता है । इस सम्प्रेषण के आधुनिक माध्यमों मे भी काफी मात्रा में परिवर्तन हुआ है ।

"विश्वहिन्दीजन इस इ. पत्रिक में शैलेशजी कहते है कि, न्यु मीडिया एक परीवर्तीत माध्यम है । नई पीढी के गए लोग या फिर पुरानी पीढी के नई सोच रखनेवाले लोग इस न्यु मीडिया का इस्तेमाल करते हुए दिखाई देते है ।"[2] इस संदर्भ मे कुछ प्रवृत्तियॉ देखी जा सकती है । इस न्यु मीडिया के कारण प्रकाशक या संपादक निर्भरता से मुक्त होते है । नितांत नए विषयों पर रचनाओं की स्वतंत्रता होती है । ऑडियो, व्हिडीओ, ग्राफिक्स, स्लाइडस जैसे विभिन्न प्ररुपो द्वारा साहित्य तैयार किया जा सकता है । विभिन्न लिपियों में एक साथ प्रकाशन की व्यवस्था है । ज्ञान को आसान और अत्याधिक गतिशिलता के साथ संप्रेशित किया जाता है । भौतिक सीमा –बंधन से मुक्त होते है तत्काल प्रतिक्रीया हासिल की जा सकती है । पाठक तक पाठक की पहूँच होती है । आदि प्रवृत्तियों के साथ मीडिया उभरकर आता है।

मीडिया आज और कल

आज मीडिया के नये रूप को हम देख रहे है जो की सोशल मीडिया है । यह पहले की मीडिया से परिवर्तनशिल दिखाई देता है । प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के बदले सोशल मीडिया कई बंधनो से मुक्त है और इस कारण सोशल मीडिया ने प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के एकाधिकार को चुनौती दी है । कई ऐसे मुद्दे है । जिन्हे प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया जगह नही देते और जानबुझ कर नजरंदाज करते है पर सोशल मीडिया के कारण ऐसे मुद्दे उपेक्षित नही रह पाते । सोशल मीडिया का बढता संसार हर क्षेत्र में अपने पैर बिखैर रहा है ।

"इंटरनेट और सोशल मीडिया भविष्य का माध्यम है । यह बुरे विचारों के लिए जितना उपयोगी है उतना ही अच्छे विचारों के लिए भी है ।"[3] आज के समय में अत्याधिक गतीशिल समाज जीवन होने के कारण तथा अपने– अपने कार्यो में अत्याधिक व्यस्तता के कारण कोई बारिकी से अध्ययन नही कर पाता । परीणाम स्वरूप जो साहित्य विधा होती है या फिर कोई लेख हो या शोधालेख इसपर बारीकि से ध्यान नही दिया जाता और प्रस्तुत विषय को समझा पाना मुश्किल हो जाता है कि किस रचना को पढे और किसे छोडे?

दूसरी बात यह है कि भविष्य में साहित्य की चोरी यह एक दुष्परिणाम देखा जा सकता है अक्सर देखा जाता है कि किसी एक की रचना किसी दुसरे ने अपने नाम से पोस्ट कर दी कई समय इस तरह की समस्या उत्पन्न होती है कि प्रस्तुत रचना का वास्तविक रचनाकार कोन है आने वाले समय में इन जैसी समस्यांओ के कारण प्रभावी साहित्यिक कृतियों को भी स्तर गिर सकता है इसकी ओर ध्यान देना वर्तमान समय मे अत्याधिक आवश्यक है ।

संदर्भ

1. अनामी शरण बबल, मीडिया के बदलते तेवर श्री.नटराज प्रकाशन नई दिल्ली पृ.सं. 51
2. सोशल मीडिया और साहित्य ूएरंदेजजंण्बवउ
3. वही

Scanned with OKEN Scanner